

औरतके लिये जनाव सिंगारके शरफ अहकाम

عورت

کیلئے
بنائو سنگار کے شرعی احکام



प्रकाशक

नुरानी कुतुबखाना

मु.पो. एपी, जि. अनासकांठा, पीन - ३८५२१०

फोन नं. : (०२७३८) २७०११२

ઔરતકે લિયે બનાવ સિંગારકે શરઘ અહકામ

عورت

کیلے

بناو سگار کے شرعی احکام

❖ મુસનિક ❖

મુફતી મુહમ્મદ કમાલુદ્દીન અહમદ રાશિદી
ઉસ્તાઝ જામિઆ દારૂલ ઉલૂમ કરાચી ૧૪

❖ લિપ્યાંતર ❖

(મૌલવી) સુલેમાન મજાદરી

પ્રકાશક

નુરાની કુતુબખાના

મુ.પો. છાપી, જિ. બનાસકાંઠા, પીન - ૩૮૫૨૧૦

ફોન નં. : (૦૨૭૩૯) ૨૭૦૧૧૨

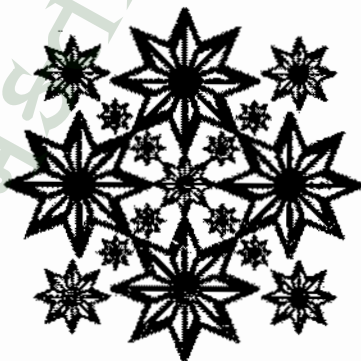
સર્વ હક સ્વાધીન છે.

छिन्तिसाध

मैं अपनी छिन्ति लकीरसी का विशाको अपने
प्यारे वालिदैनके नाम मनसूब करता हूँ
जिनहोंने छिन्तिछाई शकतसे मुझे कलम
पकडना सिखाया

और

उन असातिजमे किरामके नाम जिनकी तालीम
व तरबियतकी वजहसे अल्लाह सुब्हानहू व
तआलाने मुझे लिखनेकी तौफीक ईनायत
करमाई.



इंडरिस्त

मजमून

संका

● ईन्तिसाब	२
● इंडरिस्ते मजामीन	३
● तकरीज ખતીબે મિલ્લત મૌલાના હબીબુલ્લાહ મિસબાહ સાહબ	૬
● તકરીજ મુફતી અસગર અલી રજ્જાની સાહબ	૮
● પેશ લફઝ	૧૧
● જીનત ઔર ઈસ્લામ	૧૩
● બ્યુટી પાર્વરકે નુકસાનાત	૧૪
● બેહમા ઔરતોસે જીનત કરવાના	૧૫
● મરદોસે જીનત કરવાના હરામ હૈ	૧૬
● ઝેબો જીનતમેં ફુઝૂલ ખર્ચી	૧૬
● મુઅઝઝા માઓ ઔર ખ્યારી બહેનો!	૧૮
● ફેશનકી હુદૂદ	૧૯
● જીનત ન કરને પર સરઝનિશ કરના	૨૦
● ઔરતકો બનાવ સિંગાર પર સવાબ મિલેગા	૨૦
● ફપ્રકે લિયે બનાવ સિંગાર દુરસ્ત નહીં	૨૧
● ઝિયાદા બનાવ સિંગાર શરઅન પસંદીદા નહીં	૨૧
● સરકે બાલ કટવાના	૨૧
● બેબીકટ બાલ રખના	૨૨
● સરકે બાલ તરાશના	૨૨

मजमून

संख्या

- बालोंको डीजाईन व कैंशनसे सँवारना..... २३
- अकजाईशके लिये बाल कटवाना..... २३
- बीमारी और छईकी वजहसे बाल कटवाना..... २४
- छोटी लउकियोंके बाल कटवाना..... २४
- बालोंको ब्लेय करना और रँगना..... २४
- बवोंको भारीक बनाना..... २५
- येहरेके बाल साँक करना..... २६
- येहरेसे छाढी मुँछ साँक करना..... २६
- छोंकोंके बाल साँक करना..... २६
- हाथ पाँवके बाल साँक करना..... २७
- जिस्म गूँदना, गुँदवाना ज़ाईज नहीं..... २७
- बालोंमें बाल भिलाना..... २७
- बालोंका वग लगाना..... २८
- १-ईन्सान्नी बालोंका वग..... २८
- २-ज़ानवरके बालों या बनावटी बालोंका वग..... २८
- वगके बाल पर मसह और गुसलका हुकम..... २८
- ज़िटके कोछानकी तरह बाल बाँधना..... ३०
- बालोंको उपर या नीचे बाँधना..... ३०
- छांतोंको भारीक करना..... ३१
- मेकअप करना..... ३१
- मेकअपके जैर मुल्की सामानका हुकम..... ३१
- लिपस्टीकका ईस्तेमाव..... ३३
- पलकों पर रँग लगाना..... ३३

मजमून

संख्या

• नील पालिशका छिस्तेमाल	३४
• लंबे नाभुन रबना और तराशना	३५
• नाभुन कटनेका तरीका	३५
• डीअर्छनसे महेंदी लगाना	३६
• महलूल और डोन महेंदी लगाना	३६
• छिबटन लगाना	३६
• काला भिआब लगाना	३७
• सोने यांटीका छिस्तेमाल	३८
• नुमाईशके लिये जेवर पहनेनेकी ममानिअत	३८
• जेवर न पहनेना अक़ल है	३८
• बजनेवाला जेवर पहनेनेकी ममानिअत	३८
• प्लास्टिक और दूसरे धातके जेवर पहनेना	४१
• यूडियां पहनेना	४१
• सोना यांटी और दूसरी धातकी अंगूठी पहनेना	४१
• नगीनामें भास पत्थरका छिस्तेमाल	४२
• नाक और कानमें सूराम करवाना	४२
• लोडिट पहनेकर बैतुलभला और गुसलजाना ज्ञाना	४३
• कलाई घड़ी पहनेना	४३
• भूषण छिस्तेमाल करना	४३
• भूषण और जीनतके साथ निकलनेकी ममानिअत	४५
• परफ्यूम छिस्तेमाल करनेका हुकम	४५
• जेरे नाक बालोंकी सफाई	४६
• गीली ओड़ीवाले जूते पहनेना	४७

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तकरीज

भतीजे मिल्लत विसाने उम्मत मुक़्किरे ईस्लाम हज़रत
अल्लामा मौलाना अब्दुल्लाह मिसबाह साहब दामत

बरकातुल्लुम

रईसे ज़ामिआ जिन्नूरैन, यादगीव.

बिस्मिल्ला हिर्रुमा निर्रहीम

नहमदुल्ल व नुसल्ली अला रसूलिहिस् करीम.

अम्मा बाद!

ईस इतनेके दौरमें शरई अहकामके मुताबिक अमल करना
कोई आसान काम नहीं, ईस राहमें जेशुमार इकावटें और
मुश्किलात पेश आती हैं, लेकिन ये भी हकीकत है कि ईन मुश्किलातको
उभूर (पार) करके और हाईल इकावटोंको दूर करके अहकामे
शरीअतके मुताबिक अमल पैरा होना मज़बूत ईमान और अमलमें
पुष्टगीकी दलील है, कुरआन व हदीसकी रवसे उसका अजरो
सवाब भी बहोत ज़ियादा है.

ईस वक्त हमारे मआशरेमें भुराईत और भुराईयोंका अक
तबाह करनेवाला सैलाब उमंड आया हुवा है, हर तरफ़ बेटीनी
और अल्लाहके अहकामकी ज़िलाफ़ वरज़ी आम है, भरदोंके साथ
साथ औरतें भी ईससे मेहझू नहीं हैं, नये नये केशन और उसमें

બેમકસદ મુકાબલાકી દોડ તો તમામ હુદૂદ પાર કર ચુકી છે, ઔરતોમે બનાવ સિંગાર એક તબઈ ચીઝ છે મગર ઉસમે બી શરઈ હુદૂદ વ કુયૂદસે તજાવુઝ કરના કિસી મુસલમાન ઔરતકે લિયે દુરુસ્ત નહીં, ઔરતોંકો અપના ફિતરી હક શરીઅતકે દાઈરેમે રેહતે હુએ ઈસ્તેમાલ કરના ચાહિયે.

ઈસ બારેમે રિસાલા “ઔરતકે લિયે બનાવ સિંગારકે શરઈ અહકામ” કો દેખકર બળી ખુશી ઔર બેહેદ મસરૂત હુઈ, ઈસ મૉઝૂઅ પર યે એક નઈ તાલીફ ઔર મુન્ફરિદ તસ્નીફ છે.

મુઅલ્લિફ અઝીઝ, બરખૂરદાર મુફતી મુહમ્મદ કમાલુદ્દીન અહમદ રાશિદી સાહબ સલ્લમહૂને બળી મેહનત ઔર સલીકેસે ઈસે મુરતબ કિયા છે, ઔરતોંકે લિયે યે નિલાયત મુફીદ કિતાબ છે ઔર યે હર મુસ્લિમ ધરાનેકી ઝરૂરત છે.

મુસલમાન ઔરતોંસે શુઝારિશ છે કે ઈસે ઝરૂર પળહે ઔર ઈસકે મુતાબિક અમલ પૈરા હોનેકી કોશિશ કરે.

હુઆ છે કે અલ્લાહ સુબ્હાનહૂ વ તઆલા ઈસ જવાં સાલ, સાલેહ, મુઅલ્લિફ અઝીઝકી નેક હયાત દરઝ કરમાએ ઔર ઉસમે બરકત વ સિહહત અતા કરમાએ, ઔર ઉનકી દીની ઔર ઈબ્તી ખિદમાતકો શર્ફ કબૂલિયતસે નવાઝે ઔર ઈસે ઝખીરએ આખિરત બના દે, આમીન.

હબીબુલ્લાહ મિસબાહ

(રઈસે જામિઆ ઝિન્નૂરૈન, ચાટખીલ)



तकरीज

उज्जरत मौलाना मुहंती असगर अबी रब्बानी साहब दामत

बरकातुसुम

उस्ताजे उदीस ज़मिआ दाउल उलूम करायी

बिस्मिल्ला हिर्रुमा निरलीम

नहमहुडू व नुसल्ली अला रसूलिहिलू करीम.

अम्मा बादा ईस्लामने औरतको ज़े मरतबा अता करमाया है, किसी दूसरे मज़हब या तेल्ज़ीब व तमद्दुनमें उसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, और मजरिबने (पश्चिम मुल्कोंने) तो औरतको सिवाये ईस्तेहसाबके और कुछ दिया ही नहीं.

ये बात तो बिलकुल वाज़ेह है के औरतके पुज्जूदके जगैर इतरतकी ये सारी गुलकारियां और रंगीनियां सूनी सूनी हैं, औरतके जगैर ज़िंदगी बेरान और बेकैफ़ियत है, दुनियाकी सारी रंगीनी और दिलचस्पी औरत हीके हमसे है, औरत इस काईनातका हुस्ने असली है, तमद्दुने ईन्सानीका मरकज़, मेहवर और बागे ईन्सानियतकी बहार है, ज़िंदगीमें किसम किसमके रंग भरनेवाली, ज़िंदगीको रंगीन व मसरत बज्श बनानेवाली औरत ही है, येही औरत मर्दके लिये मायजे इरहत और सरमायजे राहत है.

लेकिन इन सब भूबियोंके बावजूद औरत अगर ईस्लामी ज़िंदगी और उसकी मोअतदिल तालीमातको पसे पुश्त डालकर

अपनी भरजी और ज्वालिशके मुताबिक बले, ईस्लामी अहकामके भर जिलाफ मगरिबी तेहजीब व तमहुन और उनके शर्मो हयासे आजाद केशनकी अपना ले, तो उससे न सिर्फ वो ખૂદ बलके जानदान और पूरे मआशराको दुबो देती है.

ईस लिये घर, जानदान और मआशराको तबाहीसे बचानेके लिये जरूरी है के औरते अपनी जिंदगीकी ईस्लामी तालीमातके मुताबिक बनाओ, "बनाव सिंगार और केशन" उनका पैदाईशी हक है, मगर उसमें भी अप्लाकी और शरई हुदूदसे तज्जवुज करना उनके लिये हरगिज ज़ाईज नहीं है.

ईस सिलसिलेमें हमारे काबिले कदर, सलीकामंद, नेक व सावेह, शगुफ़ता मिज़ाज व ખૂश अप्लाक साथी मौलाना मुस्ती मुहम्मद क्वालुद्दीन अहमद राशिदी साहबने औरतोंके लिये ये बल्लोत ही दिलवयस्य और मुकीद किताब तालीफ़ करमाई है, इज़िल मुअल्लिककी ये किताब देખकर दिल ખूशीसे जाग जाग हो गया, ये अपनी नोईयतकी पेहली और मुन्फरिद (वाहिद) किताब है, और उसके मकबूले आम होनेका अंदाज़ा ईस बातसे लगाया जा सकता है के ओक हइताके थोणे अरसामें उसका पेहला ओडीशन ખतम हो गया, मगर औरते और हज़रातकी तलब बजलती ही जा रही है.

इज़िल मुअल्लिकने काबिले कदर लियाकत, सलाहियत और सलीकेसे ईसे मुरतब किया है, किताबकी दुस्ने तरतीब और अंदाजे निगारिश काबिले मुबारकबाद है, नये नये पेश आनेवाले मसाईल पर मुहक्किफाना बहस की है, और हर मरअलाको कुरआन व सुन्नत और हुकलाकी रोशनीमें निहायत मुस्तन्ह

उपाखोंके साथ लिख्मा है. ये तमाम मसाईल औरतोंके लिये निहायत अहम हैं, ईस लिये ईस किताबका हर पण्डी लिख्मी औरतके पास होना और उसको पण्डना जरूरी है.

अजीज नौजवान काजिल मुअल्लिक ईस दौरके मुहकिक मुसन्निक और जय्यद आलिम हैं, उनहोंने ईससे पहले उसुले ईकता जैसे मुश्किल तरीन मौजूअ पर “अल मिस्याह डी रसमिल मुइती व मनाहिजुल ईकता” जैसी जप्पीम (दो जिल्दों पर मुस्तमिल) अरबी जप्पानमें जो बणी किताब लिख्मी है, उसने हुनिया भरके अहले ईल्म और अहले इतवासे भरपूर मिराजे तेहसीन लासिल किया है, उनकी ईल्मी सलाहियत, हुकला और इतवामें उनकी महारत, और काबिलियत देणकर बेसाप्ता ये लहीस शरीफ जप्पान पर आ जाती है के (मंय्युरिदिल्लाहु बिडी पैरन् यू) तर्जुमा : अल्लाह तआला जिसके साथ बलाईका ईरादा करमाते हैं उसे दीनकी समज अता करमा देते हैं.

अजीजुल कद्र नौजवान काजिल मोहकिकके हीगर काबिले कदर ईल्मी कारनामों और तेहकीकी तस्नीफात देणकर दिल ખूशीसे जूम उठा और ખुलुसे दिलसे उनके लिये हुआमों निकलीं, अल्लाह तआला उनकी ईन जलीलुल कद्र ખिदमातको शई कबूलियतसे नवाजे और मजीदे ईल्मी और तेहकीकी काम करनेकी तौहीक अता करमाओ, और उनको सिलसत व आइयतके साथ उपाते दराज अता करमाओ, आमीन.

असगर अली रब्बानी

दाइल ईकता जामिया दाइल उलूम कराची



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पेश लफ्ज

बिस्मिल्ला हिररुमा निर्रहीम

अल्लहुमुलिल्लाहि रब्बिलआलमीन, वस्सलामु वस्सलामु अला
सय्यिदिल् मुसलीन, मुहम्मादिव्वा आलिही व सल्लिबिही अहमर्धन.
अम्मा बाद!

ईस देशनेबल और पुर कितन दौरमें ईन्सानी जिंदगीका
कोई गोशा ऐसा नहीं है जहां पुराकत और पुराईयां दाबिल न
हो गई हों, नाय जाने, टी.वी., वी.सी.आर. और डिश
अन्टिनाने तो हर तरफ तहलका मचा रक्खा है, और ईनही
पुराकतके साथ साथ देशनेबल यूरोपी लेडीज और डिब्बी अकटरोंकी
तफलीहमें हमारे बच्चे बच्चे मुअज़्ज़ज और शरीफ मानद्वानोंकी
औरनें भी ईस नंगी गंगामें बेह गई हैं, नये नये ज्यूटी पार्लर
और नये नये देशनकी वजाने हर तरफ शोर भरपा कर रक्खा है,
हस्तीनो जमील नजर आना और बनाव सिगार करना औरतोंका
कितनी हक है, मगर इसमें शरई हुद्दसे तजाबुज करना और
अल्लाह तआला और उसके रसूले मकबूल (स.अ.व.) के अताअे
हुअे तरीकोंसे छिन्डिराई (नाकरमानी) करना हरगिज हुद्दसे नहीं,
औरतोंको बनाव सिगार और जेबो जीनत छिप्तिवार करनेमें शरई
तकाजोंका लिहाज रखना चाहिये, और ईस बातका अहतिमांम
करना चाहिये के उनके किसी तर्ज अमलसे अल्लाह तआला और

उसके रसूले मुकर्रम (स.अ.व.) नाराज़ न हों, और अपने हाथोंसे अपनी आभिरतको बरबाद करना कोई अकलमंदी नहीं है.

"मैंने अपनी मुअज़्ज़ल माओं और प्यारी बहनोंकी आसानीके लिये बनाव सिंगारकी मुरव्वजह बख़ोतसी सूरतोंको बयान कर दिया है जो शरअन नाजाईज़ और ज़िलाई शरअ हैं, और साथ साथ उन तरीकों पर भी वज़ाहतसे रोशनी डाली है जो शरअन ज़ाईज़ और मباح हैं.

मुअज़्ज़ल औरतें! आपसे उम्मीद है के आप इन मसाईलको गौरसे पढ़ेंगी, और उनके मुताबिक अमल पैरा छोनेकी त्तरफ़ूर कोशिश करेंगी, क्यूंके इसीमें आपकी दुनिया व आभिरतकी कामियाबी है.

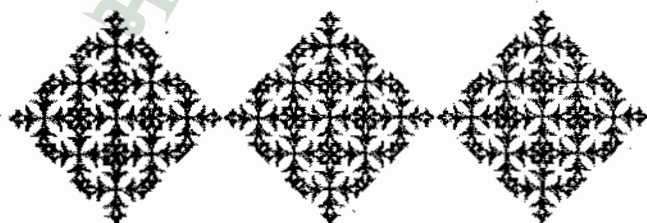
ईत्तिज़ा है अल्लाह सुन्नतनुहू व तआलासे के वो आपको और हम सबको दीने इनीफ़के अहकामके मुताबिक अमल करनेकी तौकीफ़ अता करमाये.

दुआओका तालिफ :

मुहम्मद क़मालुद्दीन अहमद राशिदी

दाइल ईक़ता ज़ामिआ दाइल उलूम कराची १४

सौमुल ईद, १०/ज़िलहज़्ज़ा स. हिजरी १४२०



जीनत और ईस्लाम

जेबो जीनत और बनाव सिंगार औरतका कितरी हक है, मेकअप करना और बनाव सिंगार करना औरतके लिये उसकी कितरतके औन मुताबिक है, क्यूंके हर औरत तलअन हसीन व जमील होना पसंद करती है..... हर औरत चाहती है के वो भूषसूरत नजर आये.

ईस्लाम औरतकी ईस कितरी ज्वाहिरा मुजाविक नहीं है. अवबता वो ये जरूर चाहता है के उसको मुनज़्जम किया जाये और उसका मुजाहिरा हर तरफसे सिमटकर साईं ओक दृष्य पर, ओक मटके सामने ही किया जाये, वही मर्द जो उसका शरीके लयात और जिंदगीका हम सकर है.

हर किसमकी जीनत और हर किसमकी पूशू ईसी शौहरके लिये ईस्तेमाल की जाये, ईस लिये के हदीस शरीफमें आया है :

“जो औरत ईत्र लगाकर बाहिर निकले और उसका गुजर औसे लोगों पर हो जो उसकी पूशू मेहसूस करें तो वो औरत अनिया (जैसी गुनेलवार) होगी.” (मुस्नदे अहमद ४/४१४)

औरत अगर सरे राह पूशू लगाकर बले, जो के मुरासलत (आपसमें पत कितापत) और नामा पर्यामका निहायत लतीफ करीआ है, और उससे आम अप्लाकी जवाबित मुतास्सिर होते हैं, ईस लिये ईस्लाम किसी मुसलमान औरतको ईस बातकी ईजाजत हरगिज नहीं देता के रास्तों और बिलभुसूस मरदोंकी मेहकिलोंके पास पूशूमें अक्सी तरह बसकर उसका गुजर हो.

“क्यूंके हुस्नो जमाव छुप सकता है लेकिन ईत्र और पूशूको

कान रोक सकता है? मूखू किआमें तेहलील छोकर आगे बढ़ेगी और उससे मरदोंके जऊनात ऊरुर भउकेगे."

वाकिआ ये हउ के छन कीमती नसीहतोंसे बेपरवाई और गइलतने भेशुमार ऊगडे और मियां बीवीके दरमियान जुदाई पैदा कर राखी है, छिस लिये औरतोंको मुरव्वजल केशन और शरीअतके मिलाइ जेभो जीनतकी बुरी वबासे बचना थाहिये.

ब्यूटी पार्लरके नुकसानात

ब्यूटी पार्लरोंमें जाने और नये नये छिजाइ किये हुअे केशन छिजियार करनेसे औरतोंके चेहरे, जिसम और बालोंका कितरी और कुदरती हुस्न अतम हो जाता है और उससे बहोतसे नुकसानात भी होतें हैं, छिस सिलसिलेमें कास्मिस मेडीकल कोलेजके प्रोफेसर डाक्टर अब्दुल मुन्हीम साहबकी तेहरीर बणी किकर अंगेज है, वो लिखतें हैं :

"छिस तरह ब्यूटी पार्लर जाकर बालोंकी सेटिंग करवाना, मुरोपके लिहाजसे केशनकी तरह मुप्तलिक रंगोंसे उनहें रंगना, बालोंको जाडने और उनके अंदर भम देनेके लिये मुप्तलिक गैर कितरी तरीके छिस्तेमाल करना, जिससे बाल जल्दी गिर जाते हैं, उनकी जडें कमजोर हो जाती हैं, या सेटिंग मशीनका छिस्तेमाल करना और कीमियावी दवाओंका छिस्तेमाल करना जिनमें असे माहे भी शामिल होतें हैं जे बालोंके लिये सप्त नुकसान देल होतें हैं, किसी भी औरतके लिये ऐसी चीजोंका छिस्तेमाल मुनासिब नहीं, क्यूंके ये बालोंके लिये सप्त नुकसान देल है, औरतोंको ऐसी जेभो जीनत छिजियार करनेसे बचना थाहिये. (माथुऊ रिहाला "तुमहारा भुसूसी मुआविज")

समारी बहोत सारी औरतोंको ये मालूम भी नहीं के उनके सरके बालोंको भीय तानकर रखनेके क्या क्या नुकसानात हैं? क्यूंके बालोंको भीय तानकर रखनेका मतलब ये है के उनकी जड़ों पर जोर डाला जाये और जूनकी मांससूख मिक्छारको बालोंकी जड़ोंमें पछोयने न दिया जाये, जिससे बालोंकी जड़ें कमजोर हो जाती हैं और बाल जल्दी गिर जाते हैं, जिसका ये नतीजा होता है के ब्यूटी पार्लरोंमें, ईशाल, डेर कटिंग, ब्रेडिंग, वेकसिंग, ब्लीचिंग करवाकर और आर्टि ब्रोऊ और अपरल्यूज बनवाकर बन ठनकर निकलनेवाली औरत येंद दिनों तक बजाहिर बहोत अच्छी भी लगेगी, लेकिन उसके बाद जूं जूं उसके अस्तर भतम होता जाता है फिर पच्चीस साला दौशीजा अगर पचास सालकी नहीं तो बालीस सालकी ऊड़र लगती है, और गुनाहका ये अस्तर ऊड़र होता है के शौहरके दिलमें मुलज्जतके बजाये मुग़्ग व नफ़रत बैठती रहती है.

बेहया औरतोंसे जीनत करवाना

औरत पुसूसन ब्यूटी पार्लरमें मुज्जयन करनेवाली जो औरतें होती हैं वो अकसर बेनमाजी और बेपरदा, आजाह प्याल, अल्लाह तआलाके अहकामसे जागी और रसूले मकबूल (स.अ.व.) की नाराज करनेवाली औरतें होती हैं, जिनमें बाऊ मौक़ात काहिर औरतें भी होती हैं, और ये जैसी औरतें होती हैं जिनके शौहर भूढ़ ही उनसे बेजार हैं और वो भूढ़ अपने शौहरोंसे बेजार होकर धन कामों पर लग गई हैं, तो वो क्या दूसरी औरतोंको जैसा तैयार करेगी जिससे वो अपने शौहरकी हो जायें?

कभी भी नहीं! बल्के मुसलमान औरतोंके लिये ऐसी बेहया और गुनेहगार औरतोंको अपने ज़िस्म पर छाव भी नहीं लगाने देना चाहिये.

भरदोंसे जीनत करवाना हराम है

और अगर व्यूटी पार्लरमें काम करनेवाले भई हों या उनका पला आना जाना हो, तो फिर उसके हराम होने और उस पर पुदाकी लानत बरसनेमें क्या शुभा बाकी रहे ज़ाओगा?

व्यूटी पार्लरमें जाकर ऐसी बेहया, बेशरम और गुनेहगार औरतोंसे अपनेको संवारना और मुजय्यन करना मुसलमान औरतोंके लिये किसी तरह भी मुनासिब नहीं, बल्के घर पर ही जो कुछ हो सके उससे अपने आपको आरास्ता व पैरास्ता करना चाहिये, ईसीमें उनके लिये दुनिया व आभिरत दोनों जहांकी भलाई और कामियाबी है.

जेबो जीनतमें झुल्ल भर्या

जेबो जीनत कीजिये और अज़र कीजिये, लेकिन उसमें छतना भी हदसे आगे न जाण्डिये के अपने बजेटका भी ज़्यादा न रहे, और अपने वालिद या अपने शौहरके पून पसीनाकी कमाईको बेदहीसे ज़ाओअ कर दें, और नयेसे नये फैशनके कपडे और भर्गेसे भर्गे जेवरात कमसे कम जैसे छालातमें तो ईस्तेमाल न करें जब के आपकी दूसरी मुसलमान बहनें सूभी रोटीके लिये भी तरस रही हों.

औरतें भुसूसन नौजवान लड़कियोंने गैर क़ौमोंको देखकर ऐसे

जैसे भर्ष बण्डा लिये हैं के न वो जरूरी भर्ष हैं, न उन पर जिंदगी
 मौजूद है, केशनकी बला ऐसी सवार हुई है और आहिरि टीप्रटाप
 र्तनी बण्डा रण्णी है के जितनी ली आमदनी हो सब कम पड
 जाती है, और कर्ज पर कर्ज बण्डता बला जाता है, केशनकी ये बेज्ज
 जरूरीतें मुसोपवालोंने निकाल दी हैं, मुसलमान औरतोंके लिये किसी
 तरह ली उनके प्यालमें पडना और उनको ईस्तेमाल करना ठीक
 नहीं है, उनकी अंधी तकलीफमें ये छाल बन गया है के दैयनेमें
 भूशछाल, हिलमें परेशान, आमदनी माकूल मगर गुजरा मुश्किल,
 र्तनीनान और बेकिरीका नाम नहीं, मुलुज्जतके जेशमें लउडियोंकी
 परवरिश शुरू हीसे इस तरह करती हैं के बयपन हीसे उनको जियादा
 भूशोंकी आदी बना देती हैं, और वो केशनकी इस कदर शौकीन बन
 जाती हैं के शादीके बाद शौहर पर जोर बन जाती हैं, आविदकी
 सारी आमदनी केशन, लिबास और जेवरकी नजर हो जाती है,
 नायार नाईतिकाकी और बह भज्जी आहिर होने लगती है, और
 जियादा बनाव सिंगारकी आदत डालनेसे तिलावते कुरआन पाक,
 दुरुह व ईस्तिस्कार, दीनी मालूमातमें लगनेकी कुरसत ली नहीं
 मिलती, फिर असल सज्जवट तो बातिन यानी हिल व इहकी सज्जवट
 और पाकीजगी है, जिरम व लिबासकी उम्हगी, सज्जवट ली उसी
 वक्त बली मालूम होती है जब हिल सुधरा, अप्लाक अच्छे, आदतें
 पाकीजा हों. अप्लाक गंदे और आहिर अच्छा उसकी ऐसी मिसाल है
 जैसे गंदगीके रेशममें लपेटकर रख दिया जाये. ये ली समज्ना चाहिये
 के जरूरत उसको केहते हैं जिसके जगैर जिंदगी हो लर हो जाये, भूल
 समज लीजिये. और अपने र्छिराज्जतका जर्छिज्ज ले लीजिये, हर
 तुके बे तुके भर्षको जरूरतमें शामिल कर लेना अकलमंदी नहीं है.

याद रखिये!

“ऐसी नादान और दुखूल पर्व औरतों की गोदों में ऐसे झूल नहीं भिला करते, और ऐसी टैडनियों पर ऐसे कीमती परिंदे नहीं बैठा करते, ऐसी कातिला ईन्सानियत मंदिर पर बैठकर येड्यहानेवाली मैनाओं अपना सुरीला नग्ना आलम को नहीं सुनाया करतीं, ऐसे नाकरमान व भूढ़ गर्ज गुलदस्तों में सुलतान नूरुद्दीन जंगी और सुलतान सलाहुद्दीन अयूबी जैसे गुलाब नहीं भिला करते, ऐसी भूढ़ गर्ज और दूसरों के हुक्कसे ला परवाही करके व्यूटी पार्लर की कुरसी पर बैठनेवाली के पालने में (गेहवारे में) उमर बिन अब्दुल अजीज (रह.) जैसे नहीं सोया करते, पुद्दा की नेअमतों के नाकहरदान टीलों और थोटियों पर पन्साअ (रह.) छमना बिन्ते जलश (रह.) का रंग नहीं भरा जा सकता, ऐसी उदास शाहराहों पर और बंजर छलाकों में मुहम्मद बिन कासिम (रह.) और उकबा बिन नाईअ (रह.) नहीं आया करते.”

“ऐसी बेपरवाह करनेवालों और अपने हिसम के गजाआ की बेबाकी के साथ नुमाईश करनेवालों की छातियों से तारिक बिन जियाद, टीपु सुलतान दूध नहीं पिया करते, ऐसी रात की रानियों के गुंथों में ऐसे छत्र आभूषण भूषणोंवाले तारिक बिन जियाद (रह.) मुहम्मद फतेह (रह.), जिनकी भूषणसे आलम ईस्लाम जूम उठता है, अपनी भूषणों से ऐसी माओं को नहीं सुंघाया करते.”

मुअज्जज माओं और प्यारी बहनों!

मुरव्वजह देशन की जिस राह पर आप चल रही हैं वो मुसलमान औरतों के लिये जेब नहीं देता, मुसलमान औरतों को

बालिये के जेभो जीनतके वो तरीके अपनाओ जे ईस्लामी तालीमातके मुताबिक हों, और अल्लाह तआला और उसके रसूल मकबूल (स. अ. व.) के ईरशादातकी लुद्दहमें हों.

ईस लिये औरतोंके लिये ये जानना निहायत जरूरी है के जेभो जीनतके कौनसे तरीके शरीअतके खिलाफ हैं और कौनसे तरीके शरीअतके मुताबिक हैं, ताके वो खिलाफे शरअ उमूरसे बच सकें. और शरई लुद्दहमें रेहते हुअे अपना कितरी अमल बनाव सिंगार भी कर सकें.

नीचे ईन ही तरीकोंको जरूरी तफसीलके साथ जिक्र किया जाता है, उनको गौरसे पढ़ें और उसके मुताबिक अमल पैरा छोनेकी कोशिश करें, ईसीमें आपके दीन व दुनिया दोनों जहानकी बेहतरी और कामियाबी पकीनी है.

ईशानकी लुद्दह

औरतोंको जेभो जीनतसे मुतअल्लिक तीन बातें बुन्यादी तौर पर जहनमें रजनी चाहियें.

(१) जिन उमूरकी शरीअतमें कतई तौर पर ममानिअत है उनहें करना किसी सूरतमें भी औरतके लिये ज़ाईज नहीं, चाहे शौहर या कोई और उनको करनेके लिये कहे, या न करनेकी सूरतमें वो उससे नाराज हो जाओ, क्यूंके उदीस शरीफमें आया है के : जुदा तआलाकी नारकमानीमें किसी मजबूककी ईताअत ज़ाईज नहीं.

(२) जो उमूर शरई लुद्दहमें हैं और ज़ाईजके दरजमें हैं उनमें पुस्अतके मुताबिक शौहरकी मुकम्मल ईताअत करना औरतके जिम्मे है. उदीस शरीफमें आया है के :

“अगर मैं किसीको किसीके लिये सिजदह करनेका हुकम देता तो औरतको हुकम देता के वो अपने शौहरके लिये सिजदह करे.”

(जमउल इवाँईद : 349)

दूसरी हदीसमें ईरशाह है, “अगर कोई आदमी अपनी बीवीको हुकम दे के सुर्ज पहाडसे पत्थर उठाकर काले पहाड, और काले पहाडसे पत्थर उठाकर सुर्ज पहाड पर ले जाये तो उसे बेछी करना चाहिये.”

(जमउल इवाँईद : 349)

जीनत न करने पर सरअनिश करना

शौहरके चाहनेके बावजूद बीवी अगर साफ सुथराई और जेबो जीनत छिपितार न करे तो शौहरके लिये बीवीको मलामत करनेका शरअन हक छसिल है, युनांये हकीमुल उम्मत हजरत मौलाना अशरफ अली धानवी (रह.) लिखते हैं : “अक हक मर्दका ये है के अपनी सूरत बिगाडके और मैली कुयेली न रखा करे, बल्के बनाव सिंगारसे रखा करे, यहाँ तक के अगर मर्दके केहने पर बी औरत बनाव सिंगार न करे तो मर्दको मारनेका छिपितार है.”

(बेहिश्ती जेवर स. 334)

औरतको बनाव सिंगार पर सवाब मिलेगा

(3) औरत शरई हुक्ममें रेहकर जे कुछ बनाव सिंगार करे उसका मकसद शौहरको ખૂશ करना हो, न के दूसरी औरतों और नामहरम मरदोंको दिखाना और छितराना. अगर शौहरको ખૂश करनेके लिये बनाव सिंगार करेगी तो ईन्शा अल्लाह उस पर उसको सवाब भी मिलेगा, चाहे दूसरी औरतें उसे देखकर ખૂश हों या नाराज.

झुप्रके लिये बनाव सिंगार दुरुस्त नहीं

अलबत्ता अगर छतराने और नामहरम मरहों या दूसरी औरतोंको ढिगाने और उन पर झुप्र करनेकी नियमतसे कपडे पहनेगी और बनाव सिंगार करेगी तो गुनेहगार होगी, इस लिये छन बातोंसे बचना जरूरी है.

जियादा बनाव सिंगार शरीअन पसंदीदा नहीं

याह रबिये! जियादा बन ठनकर रेखना शरीअतमें पसंद नहीं है, शौहरवाली औरत बकहरे जरूरत बनाव सिंगार कर ले, ये हीक है, लेकिन बनाव सिंगारकी मुस्तकिल ओक मशगला बना लेना और तरह तरहके तरीके उसके लिये सोचना और उसके लिये मुस्तकिल चीजें खरीदना और जहनको हर वक्त उसमें उलजाकर रमना मोमिनके मिजाजके खिलाफ है, जिनको आमावे साबिछा और आन्दाके हसनासे आरास्ता होना हो उनके पास छतनी कुरस्त काफे बनावट और गैर जरूरी सजावटमें वक्त खर्च करें और पसीना भी जाओआ करें.

ये तीन जुन्याही बातें जहन नशीन कर लेनेके बाद केशनकी मरम्मतसुरतीमेंसे कौनसी सूरत जाईज है और कौनसी सूरत ना जाईज, इस बारेमें शरीअतके मुफस्सल अहकाम ये हैं.

सरके बाल कटवाना

औरतोंका अपने सरके बालोंको कटवाना, कतरवाना या

केशनके तौर पर छोटे करवाना भ्वाह सामनेकी ज़ानिबसे हो या दाईं बाईंकी ज़ानिबसे हो या पीछेकी ज़ानिबसे हो यानी किसी भी ज़ानिबसे हो, मरदोंके साथ मुशाबिहतकी वजहसे नाज़र्ह और गुनाह है, हदीस शरीफ़में उसकी सप्त ममानिअत आई है, युनांये रसूले अकरम (स. अ. व.) ने ईरशाह फ़रमाया :

“अल्लाह तआलाकी लानत हो उन मरदों पर जो औरतोंकी मुशाबिहत ईप्तियार करते हैं, और उन औरतों पर जो मरदोंकी मुशाबिहत ईप्तियार करती हैं.” (बुखारी शरीफ़ अबू दाउद शरीफ़, अहमदाबाद मिशक़त शरीफ़ स. ३८०)

बिहाज़ा औरतोंके लिये सरके बालोंको कटवाना ज़र्ह नहीं. अगरये शौहर उसके लिये कहे तब भी ऐसा करना उनके लिये ज़र्ह नहीं, क्यूंके अल्लाह तआलाकी नाफ़रमानीमें शौहरकी ईताअत ज़र्ह नहीं, ऐसी सूरतमें औरतको याहिये के मुहब्बत और अहबके साथ ईन्कार कर दे, और शौहरको शरर्ह हुकमसे आगाह कर दे और नरमीसे समझा दे, उम्मीद है के अक़ मुसलमान होनेकी हेलियतसे शौहर भी शरर्ह हुकम पर अमल करेगा, और शरीअतके बिलाफ़ अमल पर ईसरार नहीं करेगा.

बेबीकट बाल रખना

औरतोंके लिये बेबीकट बाल रખना बिल्कुल ज़र्ह नहीं, बिहाज़ा उससे बचना जरूरी है.

सरके बाल तराशना

बालोंके काटनेका हुकम तो उपर लिख दिया गया, और

तराशनेका हुकम भी येही है के मलज केशनके तौर पर औरतोंके लिये बालोंको तराशना जाईज नहीं. अबबत्ता अगर बालोंके किनारोंमें शाबों निकल आई जिसकी वजहसे बालोंमें गिरहें पड़ जाती हों तो उन किनारोंको तराशनेकी गुंजाईश है, या जो बाल किमुपन उपर नीचे हो जाते हैं उनको सिर्फ नीचेसे बराबर करनेके लिये मामूली तौर पर तराशनेकी गुंजाईश है.

बालोंको डीजाईन व केशनसे संवारना

औरतोंके लिये सरके बालोंको काटे बगैर मुफ्तविक डीजाईन और केशनसे संवारना जाईज है, अबबत्ता उसमें नीचेकी बातोंका पास ज्यादा रचना बहरहाल जरूरी है :

(१) ईससे काफिर और कसिका औरतोंकी मुशाबिहत छिप्लियार करना मकसूद न हो.

(२) मलज अपना या अपने शौहरका दिल भूश करनेके गिय आसा कर लिया जाओ.

(३) ईतना वक्त उसमें जाओ न हो जिससे दूसरे जरूरी काममें गलब पड़ता हो.

अफजाईशके लिये बाल कटवाना

बाज औरतोंके बालोंकी योटियोंके छिप्पिताम पर बाल दो बार तीन तिस्तीमे सिरोंकी नोकोंसे मुन्कसिम हो जाते हैं, फिर बालादी अफजाईश बढ़ हो जाती है, अगर इन बालोंके सिरोंको गाल दिया जाओ तो फिर बाल बण्डने शुद्ध हो जाते हैं, तो ऐसी सुरताम बालोंकी अफजाईशके लिये बालोंके सिरें मामूली तौर पर

काटना बिना शुभा जाईज है.

बीमारी और दर्दकी वजहसे बाल कटवाना

अगर किसी औरतके सरमें कोई बीमारी या दर्द वगैरह पैदा हो जाये और उसके सबब बालोंका दूर करना जरूरी हो जाये तो फिर ऐसी हालतमें अवजह मजबूरी यानी शरर्ह उठरकी बिना पर बालोंका काटना जाईज है, लेकिन जैसे ही ये उठर खतम हो जाये छिज्जत भी खतम हो जायेगी, यानी उठर खतम होनेके बाद बालोंका काटना जाईज न होगा. (अल इशबाह वन्नाज्जर २/१७०, इत्तावा आनिया ३/४०८)

छोटी लडकियोंके बाल कटवाना

बाबिग या करीबुल बुलूग लडकियोंके बाल कटवाना तो जाईज नहीं जैसाके उपर तफसीलसे लिख्जा गया है, अलबत्ता ऐसी बच्चियां जे छोटी हों और करीबुल बुलूग न हों यानी जिनकी उमर नव सालसे कम हो तो भूबसूरती या किसी और जाईज मकसदके लिये उनके बाल कटवाना जाईज है, फिर भी काफिरों और फासिकोंके साथ ईरादी तौर पर मुशाबिहत छिज्जियार करनेसे बचना चाहिये. क्यूंके शरीअतमें छिन जैसोंके साथ मुशाबिहत छिज्जियार करनेसे मना किया गया है.

बालोंको ब्लेच करना और रंगना

ब्यूटी पार्लरमें औरतके बालोंको ब्लेच Bleach किया

जाता है और फिर दूसरे रंगसे रंगा जाता है, तो ये काम अगर शरई लुट्टकमें रेलते हुए किया जाये तो शरअन इसमें कोई मुआरफ़ा नहीं है. और शरई लुट्टककी तकसीब कितानके शुरूमें बयान कर दी गई है.

भवोंको भारीक बनाना

आज कल औरतें भवोंको भूबसूरत शकल देनेके लिये आँखों **Eyebrow** के आसपासके बंद बाल नोच लेती हैं, इस तरह भवें भूबसूरतीसे गोल लकीर जैसी बन जाती हैं, मकसद इससे मलज भूबसूरती और जीनत है, लेकिन ऐसा करना शरअन जाईज नहीं, क्योंकि जिस्म अल्लाह सुब्बानहू व तआलाकी अमानत है, जिसमें किसी शरई और कितरी ज़हरतके अगैर अपनी तरफ़से बदलाव करना दुइस्त नहीं है, इसी वजहसे रसूलुल्लाह (स. अ. व.) ने भूबसूरतीके लिये छांतोंके दरमियान फरस (जुदाई) पैदा करने और जिस्मको गूदने या गूदानेको नाजाईज, मूजिबे पागत और अल्लाह तआलाकी पैदाईशमें बदलाव करार दिया है, और औरतोंको अपने जिस्मसे बाल नोचनेकी ममानिअत इरमाई है, युनाये भवोंके बाल नोचकर भारीकसी लकीर बना पाना और छानों भवोंके दरमियान फासला करना जैसाके आज कल इसका आम केशन है, सरासर नाजाईज है.

(मिशक़त शरीफ़ स. ३८१)

शौहरकी भूशदिलीके लिये भी ऐसा करना जाईज नहीं, मालबना भवोंके बाल अगर बलोट बण्ड गये हों तो उनको कतरकर या कतरवाकर किसी कदर कम करना बिलाशुबा जाईज है.

ચેહરેકે બાલ સાફ કરના

ચેહરેકે બાલ ઔર રૂએ જો પેશાની ઔર મુંઢ પર હોતે હેં ઉનકો અગર નોચકર નિકાલો જાએ તો ચુંકે ઉસમેં અપને જિસ્મકો બિલા વજહ તકલીફ દેના હેં ઈસ લિયે નોચકર નિકાલના મુનાસિબ નહીં, અલબત્તા અગર કિસી પાવડર વર્ગેરહકે ઝરીએ સાફ કિયા જાએ તો ઉસકી ગુંજાઈશ હેં.

ચેહરેસે ડાળ્હી મુંછ સાફ કરના

બાઝ ઔરતોકે ચેહરે પર ડાળ્હી મુંછ નિકલ આતી હેં, તો ઉસકો સાફ કરના, ન સિફ જાઈઝ બલકે અફઝલ ઔર બેહતર હેં, અલબત્તા ઈન ઝાઈદ બાલોકો ભી નોચકર નિકાલનેમેં ચુંકે બિલા વજહ અપને જિસ્મકો તકલીફ દેના હેં ઈસ લિયે નોચકર નિકાલના મુનાસિબ નહીં, કિસી પાવડર વર્ગેરહકે ઝરીઆ સાફ કિયા જાએ તો દુરેસ્ત હેં.

હોઠોકે બાલ સાફ કરના

અગર કિસી ઔરતકે હોઠકે ઉપર બાલ ઉગ આએ હોં તો ઉનહેં સાફ કરનેમેં કોઈ હરજ નહીં, બલકે ઉનહેં દૂર કરના ઔરતકે હકમેં અફઝલ ઔર મુસ્તહબ હેં. (ફિતાવા શામી ૬/૩૭૩)

અલબત્તા ઈન ઝાઈદ બાલોકો ભી નોચકર નિકાલનેમેં ચુંકે બિલા વજહ જિસ્મકો તકલીફ દેના હેં ઈસ લિયે નોચકર નિકાલના મુનાસિબ નહીં, કિસી પાવડર વર્ગેરહકે ઝરીઆ સાફ કરના ચાહિયે.

हाथ पांवके बाल साफ़ करना

आरतोंके लिये कलाईयों और पिंडलियोंके बालोंको साफ़ करना ज़रूरी है, इस लिये के औरतके हकमें जीनत मतलूब है, नीज हाथ पांवके बाल साफ़ करनेमें असबब निहकतमें कोई तब्दीली नहीं होती और उसमें कोई धोका भी नहीं होता, इस लिये हाथ और पांवके बाल साफ़ करना ज़रूरी है. (मिशक़त ८/२१२)

अबजत्ता छिन बालोंको भी नोचकर निकालनेमें थूँके बिलां बजह अपने जिस्मको तकलीफ़ देना है इस लिये नोचकर निकालना मुनासिब नहीं, किसी फ़ावदर वगैरहसे साफ़ करना ज़रूरी है.

जिस्म गूदना, गूदवाना ज़रूरी नहीं

जिस्म गूदवाना और गूदवाना ज़रूरी नहीं इराम है, इसका तरीका ये होता है किसी सूई वगैरहसे बालमें गेहरे गेहरे निशान डालकर उसमें सुरमा या नील भर दिया जाता है, इस तरह जिस्म पर ज़ानवरी और दूसरी चीज़ोंकी तस्वीरें बनाई जाती हैं, लहरीस शरीरमें इस पर सप्त वर्गों आई हैं, हुज़ूर (स.अ.व.) ने ऐसी आरतों पर खानन इरमाई है. (मिशक़त शरीफ़ ३८१)

इस लिये औरतोंके लिये छिन नाज़रूरी और निवाइं शरीआत (मुरसे) बनना वाजिब है.

बालोंमें बाल मिलाना

इसी तरह औरतें ज़ेओ जीनतके लिये और अपने बाल

लंबे या घने झूले हुअे जाहिर करनेके लिये दूसरे किसी भई या औरतके बाल लेकर अपने बालोंमें मिला लेती हैं, यूँके ईसमें धोका और झूठ है ईस लिये रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईसको सप्त नापसंद करमाया. और ऐसी औरतों पर लानत करमाई, ईस लिये औरतोंके लिये ईन नाजाईज कामोंसे बचना जरूरी है.

युनांये हदीस शरीफमें ईरशाह है :

“छतरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रहि.) इरमाते हैं के रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया के फुदाकी लानत हो उस औरत पर (जो बालोंको लंबा या झूला हुवा बनानेके लिये दूसरे किसी भई या औरतके बाल) अपने बालोंमें या किसी दूसरेके बालोंमें मिला ले, और उस औरत पर बी फुदाकी लानत हो जो किसी औरतसे कहे के दूसरेके बाल मेरे बालोंमें मिला दे. और इरमाया के फुदाकी लानत हो उस औरत पर जो गूदनेवाली है और गूदवाने वाली है.” (मिशकत शरीफ स. उट १, अज बुभारी, मुस्लिम)

बालोंका वग लगाना

ईस जमानेमें वग यानी बनावटी बालोंका ईस्तेमाल बहुत आम है, और जदीद साईन्सने ईसमें बी काफ़ी तरक्की की है, और नये नये अंदाजसे बाल लगवाअे जानेके तरीके ईजाद हो गये हैं, शरई ऐतिबारसे हम उन तरीकोंको दो सूरतोंमें बयान कर सकते हैं.

१-ईन्सानी बालोंका वग

हदीस शरीफकी रवसे ये बात बिल्कुल वाजिह है के ईन्सानी

आलोका वग लगवाना जाँऊ नहीँ छराम है, याहे वगके आल मशीनके ऊरीआ ईस तरह लगवाओ के वो जिस्मके साथ मुस्तकिल भनस्त (फिट) हो जाओ और वो जिस्मसे अलग न हो सकते हो, या ईस तरह न लगवाओ बल्के आरजी तौर पर लगवाओ के जब याहें उसे पछेन लें और जब याहें उसे उतार लें, छनमेंसे किसी सूरतमें भी छनसानी आलोंका वग लगवाना जाँऊ नहीँ.

(मिशकत शरीफ स. ३८१)

२-जानवरके आलों या बनावटी आलोंका वग

छनसानके सिवा किसी जानवरके आलोंका वग या बनावटी आलोंका वग लगाना और लगवाना शरअन जाँऊ है, अगर छन आलोंका वग जिस्ममें मुस्तकिल तौर पर फिट करके लगाया जाओ तो उसमें भी कोई छरज नहीँ जाँऊ है. और अगर मुस्तकिल तौर पर न लगाया जाओ बल्के आरजी तौर पर लगाया जाओ यानी जब याहें लगा लें और जब याहें छटा दें तो ये भी जाँऊ है.

वगके आल पर मसह और गुसलका हुकम

अगर वगके आल जिस्मके साथ मुस्तकिल फिट हो जाओ मार या जिस्मसे अलग नहीँ हो सकते हो, तो पुजूके दौरान उस पर मसह करना जाँऊ है. और छसी छलतमें इर्ज गुसल भी फ़रमा है, और अगर ये आल जिस्मके साथ मुस्तकिल फिट न हो जाओ मारजी हो के जब याहें लगा लें और जब याहें छटा दें, तो विस पर मसह जाँऊ नहीँ, और छन आलोंके छोते हुओ अगर जिस्म तक पानी न पछोये तो ऐसी सूरतमें इर्ज गुसल भी दुइस्त

नहीं होगा, औसी सूरतमें उनको हटाकर सर पर मसह करना जरूरी है, और कर्ज गुसलमें गुसलसे पेहले उनको उतारकर गुसल करना जरूरी है. (इतावा हिन्दिया प/उपट, तकमिलह इतहुल मुवहिम ४/१८१)

गिटके कोछानकी तरह बाल बांधना

औरतोंके बिये अपने सरके बालोंको गिटके कोछानोंकी तरह बांधना जाईज नहीं, क्यूंके उद्दीस शरीफमें उसकी ममानिअत आई है, और इरमाया गया है के जो औरतें गिटके कोछानकी तरह बाल बांधेंगी वो जन्नतमें दाखिल नहीं होंगी और न उसकी पूश्नू पा सकेंगी, फिर इरमाया के उस (जन्नत) की पूश्नू छितनी छितनी दूरसे सुंधी जाती है. (मिशकात स. ३०६)

जन्नतसे मेहरूमी निहायत बद्बान्तीकी बात है, इस बिये औरतोंको इस तरह गिटके कोछानकी तरह बाल बांधनेसे बचना वाजिब है.

बालोंको उपर या नीचे बांधना

अलबत्ता अगर औरत अपने बालोंको जमा करके सरके उपर या नीचेकी तरह बांध ले जैसाके आम तौर पर बांधे जाते हैं, तो उसमें कोई हरज नहीं है, और औसा करनेवाली औरत उद्दीसे मजकूरकी वरिदमें दाखिल नहीं, क्यूंके उद्दीसे मजकूरकी वरिद औसी औरतोंके बारेमें है जो अपने बालोंको गिटके कोछानकी तरह मरहोंकी अपनी तरह माईल करनेकी गर्जसे बनाओं और नंगे सर दिरें.

दांतोंको भारीक करना

हुस्न और भूषसूरतीके लिये दांतोंको किसी तरह घिसकर भारीक करना और दांतोंके दरमियान कुशादगी निकालनेकी कोशिश करना नाजार्थक और ममनूअ है, और काबिले खानत बीजोंमें शामिल है, ऐसा करनेसे अल्लाहकी पैदा इरमूदा शकल और सूरतमें अपनी तरफसे अदल बदल करना लाजिम आता है, जो निहायत ही बुरा अमल है और सप्त ममनूअ और मजभूम है और खानतका काम है, उद्दीस शरीफमें छिरोशाह है :

“भुदाकी खानत हो उन औरतों पर जो हुस्नके लिये दांतोंके दरमियान कुशादगी कराती हैं, जो अल्लाहकी भिदकतको बदलनेवाली हैं.” (बुभारी शरीफ)

मेकअप करना

औरतको चाहिये के वो अपने शौहरके सामने अपनी सूरत बिगाडके और मैली कुयेली न रखा करे. बल्के साफ सुथरी और भनाव सिंगारसे रखा करे. और इस मेकअपके लिये शरई हुदूदमें रोकते हुये औरतके लिये मेकअप करना, पावडर, कीम और ईसी तरह मेकअपकी दूसरी चीजोंका ईस्तेमाल बिवाशुभा जार्थक है.

मेकअपके गैर मुल्की सामानका हुकम

जैवो जीनत और मेकअपमें ईस्तेमाल होनेवाली बहुत सारी चीजें बाहिर ममायिकसे आती हैं, मसलन पावडर, कीम,

विपस्टीक, वॉशन, नील पालिश वगैरह, उनके बारेमें कहा जाता है के उनकी तैयारीमें गिन्जीर (सुव्वर) की चरबी या मुरदार ज़नवरोंकी चरबी वगैरह मिलाई जाती है जो के शरअन हुराम है, इस लिये ये सवाल पैदा होता है के क्या शरअन इन चीज़ोंका ईस्तेमाल ज़ाईज होगा या नहीं?

इस सवालका जवाब ये है के इन चीज़ोंके मुतअल्लिक अगर ये बात यकीनी तौर पर मालूम हो के उनके अंदर ऐसी चीज़ें ईस्तेमाल की गई हैं जिनका ईस्तेमाल शरअन हुराम है (जैसे सुव्वरकी चरबी या मुरदार ज़नवरकी चरबी वगैरह) और ये भी यकीनसे मालूम हो के इन नाज़ाईज और नापाक चीज़ों (चरबी वगैरह) को किसी कीमियावी अमलके ज़रीआ उनकी हकीकत और मालियतको तबदील नहीं किया गया है, तो ऐसी सूरतमें इन चीज़ोंका ईस्तेमाल ज़ाईज नहीं, इनके ईस्तेमालसे बचना बाज़िब है, क्यूंके ये चीज़ें हुराम और नापाक हैं।

और अगर इनमें हुराम चीज़ोंके ईस्तेमाल किये जानेका यकीन न हो, बल्के मહज़ शक हो के शायद उनमें किसी हुराम चीज़को ईस्तेमाल किया गया हो, तो मહज़ अेहतिमालकी बुन्याद पर इन चीज़ोंका ईस्तेमाल नाज़ाईज नहीं होगा।

नीज़ अगर इन चीज़ोंमें हुराम और नापाक चीज़ोंको शामिल करना यकीनी हो मगर साथ साथ ये भी यकीनी तौर पर मालूम हो के इन चीज़ोंके मिलाओ जानेके बाद किसी कीमियावी अमलके ज़रीआ उनकी हकीकत व मालियत बदल गई है, तो ऐसी सूरतमें इन चीज़ोंका ख़ारिज (बाहिरका) ईस्तेमाल ज़ाईज है।

(इतावा शामी जि. 394)

लिपस्टिकका छिस्तेमाल

आज कल औरतें अपने लोठों पर जो लिपस्टिक छिस्तेमाल करती हैं उसके छिस्तेमालके बारेमें शरई हुकममें कुछ तक्सील है, और वो ये है के अगर वो लिपस्टिक ऐसा हो के उसके छिस्तेमालसे ऐसी तेह न जम जाती हो के जिसके होते हुअे पुजू और कर्ज गुसलमें जिस्म तक पानी न पहुँचता हो, बल्के उसके होते हुअे वो पुजू और कर्ज गुसलमें जिल्द (जाल) तक पानी अच्छी तरह पाया जाता हो तो उसका छिस्तेमाल ज़रूरी है. और अगर उसके छिस्तेमालसे ऐसी तेह जम जाती हो के जिसके होते हुअे पुजू और कर्ज गुसलमें जिस्म तक पानी न पहुँचता हो, तो उसके छिस्तेमालसे पुजू और कर्ज गुसल नहीं होगा, तो ऐसी सूरतमें औरतको पाकी, पुजू और कर्ज गुसलकी ज़रूरतके वक्त उसको लगाना ज़रूरी नहीं, क्यूंके जब पुजू और कर्ज गुसल न होगा तो पाक कैसे होगी और नमाज़ कैसे पढ़ेगी?

अलबत्ता अगर उसके छिस्तेमालसे पुजू, कर्ज गुसल और नमाज़ वगैरहमें कोई ખलल न आता हो यानी पुजू और कर्ज गुसलसे पेहले उसे अच्छी तरह साफ़ करके पुजू और कर्ज गुसल कर लें, तो फिर कोई भी औरत अपनी ખूबसूरतीके लिये, या बीबी अपने शौहरका दिल ખूश करनेके लिये उसे लगा सकती है. और शरअन ये उसके लिये ज़रूरी है.

पलकों पर रंग लगाना

पलकों पर जो रंग लगाया जाता है या आईब्रो

(Eyebrow) लगाया जाता है, अगर वो पुत्र और कर्ज गुसलमें जिस्म तक पानी पछोयनेसे रोकनेवाला नहीं है, तो उसका ईस्तेमाल ज़रूर है. और अगर उसे लगानेके बाद जिस्म तक पानी नहीं पछोयता, तो उसका हुक्म नापुन पालिशकासा है जो आगे जिकर दिया जा रहा है.

नील पालिशका ईस्तेमाल

नील पालिशका ईस्तेमाल या ईस जैसी वो चीज़ें जिनके ईस्तेमालसे ऐसी तेह ज़म जाती हो के उसके होते हुअे पाल तक पानी नहीं पछोयता, तो उनहें पाकी, पुत्र और कर्ज गुसलकी ज़रूरतके वक्त लगाना ज़रूर नहीं, क्यूंके उसके होते हुअे पुत्र और कर्ज गुसल नहीं होता, और जब पुत्र और कर्ज गुसल नहीं होगा तो औरत पाक नहीं होगी, बिलाला उसकी नमाज़ भी नहीं होगी.

अलबत्ता अगर ईन चीज़ोंके ईस्तेमालसे ऐसी तेह न ज़मती हो के उसके होते हुअे पानी जिस्म तक पछोयनेमें ज़रूर बाधे हो, या ऐसी तेह तो ज़मती हो मगर पुत्र और कर्ज गुसलसे पहले उनहें अच्छी तरह साफ़ करके पुत्र और कर्ज गुसल कर लें, तो फिर औरतके लिये उसका लगाना ज़रूर है, लेकिन औरतोंके लिये मुनासिब ये है के वो ऐसी कुज़ूल चीज़ोंकी आदत न डालें जिनसे आगे बलकर नमाज़ वगैरहमें ज़रूर बाधा होने और मनाशरतमें कादिसों और फ़ासिकोंकी मुशाबिहत पैदा होनेका ईमकान हो.

लंबे नाभुन रખना और तराशना

नाभुनोंको भूबसूरत बनानेके लिये उसमें तराश व पराशका अमल ज़रूरी है, लेकिन बड़ोतसी औरतोंमें ये रिवाज पाया जाता है के वो लंबे लंबे नाभुन रખती हैं और उनको नहीं कटवाती..... जब के मसनून अमल ये है के हर हफ़तामें ओक हफ़ा नाभुन कटवाओ ज़ाओ. और अगर उससे ताभीर हो ज़ाओ तो पंद्रह दिनके अंदर अंदर काटना चाहिये, और अगर उससे भी ताभीर हो ज़ाओ तो ज़ियादासे ज़ियादा चाहीस दिन तककी ताभीरकी गुंजाईश है, इससे ज़ियादा ताभीर करना और लंबे लंबे नाभुन रખना ज़रूरी नहीं गुनाह है, लिहाज़ा औरतोंको इससे बचना चाहिये.

(मुस्लिम शरीफ़ १/१२८, इतावा आलमगीरिया ५/उप७)

नाभुन काटनेका तरीका

नाभुन काटना बजाते भूद सुन्नत है, और उसमें कोई मज्बूस तरीका मसनून नहीं है, और जिस तरह भी काटे ज़ाओगे सुन्नत अहक़ हो ज़ाओगी, फिर भी बाज़ हुक़ूला (रह.) ने इरमाया के उसमें बेहतर तरीका ये है के दायां हाथकी सहादतकी उंगलीसे शुरू करे और इसी हाथके अंगूठे पर ख़तम करे, और दायां पैरकी छोटी उंगलीसे शुरू करे और बायां पैरकी छोटी उंगली पर ख़तम करे.

नीज़ ज़ुम्माके दिन ज़ुम्मासे पहले नाभुन काटना अफ़ज़ल है नीज़ रातको भी नाभुन काटना ज़रूरी है, और नाभुन काटनेके बाद उसे बैतुलपला और गुसलपानाके अलावा दूसरी जगह रेंकना ज़रूरी है, अलबत्ता हफ़न कर देना बेहतर है. (मिरकात २/४)

डीज़ार्छनसे महेँदी लगाना

औरतें जो अपने हाथों पर महेँदी लगाती हैं, जैसे आज कल डीज़ार्छन और डेशनके मुताबिक लगाई जाती है, और वसा औकांत हाथोंकी पुश्त पर भी पास डीज़ार्छनसे महेँदी लगाई जाती है, तो औरतोंके लिये ये सब जाईज है, बल्के हाथ और पांव पर जीनतके लिये महेँदी लगाना उनके लिये बेहततर और अफ़जल है.

(मिशक़ात स. ३८७, अज़ अबू दाउद व नसाई)

पास डीज़ार्छन और डेशनके साथ महेँदी लगाई जाये तो उसमें भी कोई हर्ज नहीं, दुरुस्त है, फिर भी उसमें ज़ियादा वक्त अज़ेअ करना मुनासिब नहीं.

महलूल और कोन महेँदी लगाना

आज कल बाज़ारोंमें कोन महेँदी और महेँदीसे तैयार शुद्ध महलूल, महेँदीकी तरह छिस्तेमाल किया जाता है, तो औरतोंके लिये उनका छिस्तेमाल जाईज है, महेँदी और महलूलकी तेह उतरनेके बाद वुजू और गुसल दुरुस्त हो जाता है, क्यूँके उसके बाद महेँदीका सिई रंग बाक़ी रह जाता है जो वुजू और गुसलमें ज़िस्म तक पानी पलोंयनेमें मानेअ नहीं होता. (इतावा शामी : १५४)

उबटन लगाना

शाही बियाहके मौका पर लडकीको उबटन लगानेका रिवाज है और शरअन उसमें कोई हर्ज भी नहीं, यानी लडकीको उबटन

लगाना की नकसिही जाईज है, लेकिन इस मौका पर जो मकसिद व मुन्करात होते हैं मसलन तसवीर कशी, बेपरहगी, अंजनबी मरहों और औरतोंका छिन्निदात, और इसराफ वगैरह ये सब उमूर नाजाईज और हराम हैं, इस लिये इन नाजाईज उमूरसे बचना जरूरी है, अलबत्ता इन तमाम मकसिद और मुन्करातसे बचकर उभटन लगाया जाये तो उसमें कोई हरज नहीं।

काला भिजाव लानीना

औरतोंके लिये अपने बालोंको काला करने या बालोंको पूजसूरत बनानेकी गरजे भिजाव या दूसरी क्रीमियावी चीजें, मसलन काला कोला, काली महेदी या दीगर छेर क्लर्ज लगानेके बारेमें शरई हुकूममें कुछ तफसील है, और वो ये है के ખાલिस काले रंगके अलावा दूसरे रंगोंका भिजाव लगाना औरतके लिये बिलाशुबा दुरुस्त है, और सुर्ज भिजाव, ખાલिस छिनाका या कुछ सियाही माईल जिसमें कतम शामिल किया जाता है औरतके हकमें मसनून भी है।

और जहां तक ખાલिस काले रंगके भिजाव और ખાલिस काले रंगके दूसरे क्रीमियावी छेर क्लर्जका तअल्लुक है, तो उससे अगर अपने आपको कम उमर और जवान आखिर करके किसीकी धोका देना मकसूद हो तो ये बिल्कुल नाजाईज और हराम है, और अगर उससे किसीको धोका देना मकसूद न हो, बल्के मिथां बीबीका मआमला हो और शौहरको ખૂश करनेके लिये बीबी उसकी ખ्वाहिश पर जीनतके तौर पर ખાલिस काले रंगका भिजाव लगाये, तो इसकी भी मुंजाईश है, बाज उलमाने इसकी ईजाजत दी है।

(मिरकात शेरह मिशकात जि. ८, स. ३०४)

सोने यांटीका छस्तेमाल

औरतको जेवरसे बहोत जियादा मुहब्बत होती है, और ये बात मशहूर है के अगर औरतके जिस्ममें हर जगह सोनेकी कील गाड़ दी जाये तो सोनेकी मुहब्बतकी वजहसे उसा भी तकलीफ मेहसूस नहीं करेगी, दीने ईस्लाम कितरतके मुताबिक है, नफ्सकी ज्वालिशोंकी भी रियायत रખी है, मगर उसमें अतिहाल ऊचरी है और उसके लिये दुहूद भी मुकर्रर करमा दी हैं, और ऐसे कानून लागू करमा दिये हैं जे ईन्सानको गुडर, तकब्बुर, शेम्मी, दूसरोंकी हकारत, भूद पसंदी और लोगोंके दिल दुमाने और हक तल्लीसे मेहकूज़ रખते हैं, अगर किसी औरतको हलाल मालसे मिला हो तो सोने और यांटी दोनोंका जेवर पहेनना उसके लिये बिवाशुबा जाईज है.

नुमाईशके लिये जेवर पहेननेकी ममानिअत

अलबत्ता रियाकरी और हिप्पावेके लिये सोनेके जेवरत नहीं पहेनना चाहिये, और आं हजरत (स.अ.व.) ने इरमाया के “जे औरत जाहिर करनेके लिये सोनेका जेवर पहेनेगी उसकी वजहसे उसे अजाब दिया जायेगा.”

जेवर हिप्पानेका मर्ज औरतोंमें बहोत होता है, और अगर किसीको पता न चले तो मजलिसमें बैठे हुअे तरकीबों और तदबीरोंसे बताती हैं के हम जेवर पेहने हुअे हैं, मसलन बैठे बैठे गरमीका बहाना करके अक हम कान और गला ढोल देंगी, जवानसे

कहेंगी अरे कितनी गरमी है, और दिलमें जेवर आहिर करनेकी निश्चय है, अल्लाह तआला नफ़सकी मक्कारियोंसे बचाओ.

जेवर न पहनेना अफ़जल है

बहरहाल उपरवाली ज़राबियां न हों तो औरतोंको जेवर पहनेनेकी गुंजाईश है, मगर न पहनेना फिर भी अफ़जल है, दुनियामें न पहनेंगी तो आखिरतमें बख़्त मिलेगा, युनांये आं हज़रत (स.अ.व.) ने इरमाया :

“अगर तुम ज़न्नतके जेवर और रेशमको चाहते हो तो उनको दुनियामें मत पहनो.” (मिशक़त शरीफ़ स. ३७८)

बजनेवाला जेवर पहनेनेकी ममानियत

जिस तरह औरतोंका ज़िस्म क़ेयना मरदोंके लिये ज़िन्सी उभारका सबब बनता है, इसी तरह उनकी आवाज़ और उनके ज़िस्म पर आरास्ता जेवरकी आवाज़ भी मरदोंमें ज़िन्सी उकसाव पैदा करती है, इसके अलावा नीचेकी आछाहीससे ये बात भी बाज़ेह होती है के बजनेवाला जेवर और धूधरू और घंटियां शयतानको पसंद हैं, और ये शयतानके भाजे हैं, जब उनमेंसे आवाज़ निकलती है तो वो भ्रूश होता है, और जहां ऐसी चीज़ें होती हैं वहां रहमतके इरिस्ते दाय़िम नहीं होते, ईन हदीसोंके पेशे नज़र दूकहाये क़िसम (रह.) ने लिख्ना है के ऐसा जेवर जिसके अंदर ज़ोल्में बजनेवाली चीज़ें पड़ी हुई हों उसके पहनेनेकी शरअन ईज़ाज़त नहीं है, जैसे पुराने ज़मानेमें जांजन होते थे, और उसके अलावा भी कई चीज़ें

औसी बनाई जाती थी, देहातमें अब भी इस तरहके जेवरतका रिवाज है, और शरअन ये सब ममनूअ है.

हदीस शरीफमें है :

“हजरत बुबाबा (रदि.) इरमाती हैं के मैं हजरत आईशा (रदि.) के पास हाजिर थी, उस वक्त ये वाकिआ पेश आया के ओक औरत ओक लडकीको साथ लिये हजरत आईशा (रदि.) के पास अंदर आने लगी, वो लडकी जांजन पेहने हुअे थी, जिनसे आवाज आ रही थी. हजरत आईशा (रदि.) ने इरमाया के जब तक उसके जांजन न काटे जाअे मेरे पास उसे हरगिज न दाना, मैंने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से सुना है के “जिस घरमें घंटी हो उसमें (रहमत) के इरिश्ते दाखिल नहीं होते.” (मिशकात स. ३७८)

दूसरी हदीसमें है :

“घंटियां शयतानके बाजे हैं.” (मिशकात स. ३३८)

ओक और हदीसमें ईरशाह है :

“हर घंटीके साथ शयतान होता है.” (मिशकात स. ३७८)

ओक हदीसमें हजरत अबू उमामा (रदि.) हुजुरे अकरम (स.अ.व.) का ईरशाह नकल करते हैं के :

“अल्लाह तआला धुंधड़ओकी आवाज औसे ही नापसंद करता है जैसे गानेकी आवाज, और अल्लाह तआला गानेवालेको वैसीही सजा देगा, जैसी के वो मोसीकीसे लगाव रखनेवालेको देगा, और आवाज वाले धुंधड़ तो सिई वोही औरत पहेन सकती है जो अल्लाहकी रहमतसे दूर हो.”

और जिस जेवरमें बजनेवाली चीज न हो मगर जेवर आपसमें ओक दूसरेसे मिलकर बजता हो उससे भी मना किया

गया है, युनांये उसके बारेमें कुरआन हकीममें ये ईरशाह है :

“और अपने पांच (बलनेमें जमीन पर) ओरसे न मारें, ताके उनकी वो जीनत मालूम हो जअे जिससे वो पोशीदा तौर पर आरास्ता हैं.” (सूरअे नूर आयत ३१)

प्लास्टिक और दूसरे धातके जेवर पहेनना

आज कल बनावटी चीजोंका दौर है, बनावटी जेवरात जे के प्लास्टिक, सिकका, अेल्युमीनियम वगैरहके मुक्कज्जसे तैयार होते हैं, और उन जेवरात पर सोने या चांदीका पानी बण्हाया जाता है, ऐसे जेवरातका ईस्तेमाल औरतोंके लिये जाईज है.

यूडियां पहेनना

ईसी तरह प्लास्टिक और दीगर धातकी यूडियां पहेनना भी औरतोंके लिये जाईज है, लेकिन यूडियां जरीदनेके लिये औरतोंका बगैर शरई परदा बाजारोंमें जाना और दुकानोंका बक्कर लगाना बिलकुल नाजाईज और सप्त गुनाह है, ईसके अलावा मर्द दुकानदारोंके साथ हंसी मजाक करना और उनके हाथों यूडियां पहेनना और उनके लिये पहेनाना निहायत बेशरमी और सप्त गुनाह है, ईस लिये औरतें और दुकानदार दो-नोंके लिये जरूरी है के ईन जिलाके शरअ उमूरसे मुकम्मल तौर पर परहेज करें.

सोना चांदी और दूसरी धातकी अंगूठी पहेनना

औरतोंके लिये सोना और चांदीकी अंगूठी पहेनना तो

बिलाशुभा जाईज है, अलबत्ता सोना और यांटीके अलावा दूसरी धातकी अंगूठी पहनेना औरतोंके लिये जाईज नहीं.

(इतावा हिन्दिया जि. प, स. ३३५)

और औरतोंके लिये प्लास्टिककी अंगूठी पहनेना जाईज है या नहीं? इसके मुतअल्लिक हुकलाअे किराम (रह.) की कोई सरीह ईभारत तो नहीं मिली, अलबत्ता क्वाईद और हुकलाअे किराम (रह.) की ईभारातके उमूमसे इसकी ली ममानिअत मावूम होती है, इस लिये इससे ली बनना चाहिये.

नगीनेमें जास पत्थरका ईस्तेमाल

अंगूठीमें नगीना तर किसमें जास पत्थरका लगाना जाईज है. और अगर किसी जास पत्थर या यादीदी अंगूठी जो किसी जास किसमें ली जास पत्थरनम किसी बीमारीकी शिलहत तजुअसि सांगित हो तो इसी गर्जसे उसको ईस्तेमाल करना जाईज है.

लेकिन पत्थरके बारेमें ये अकीदा रबना चाहिये के पत्थरमें ये तासीर हक तआलाने पैदा कर दी है और फिर जिस वक्त चाहता है हक तआला ईन तासीरातको नाईज करता है, यीजोंका उसमें कोई हफल, तसर्हुक और तासीर नहीं, अल्लाह तआला ही उसमें असर पैदा करता है, येही अकीदा पत्थर और अंगूठीके बारेमें रबना बहरहाल जदूरी है. (इतावा रशीदिया स. ५३)

नाक और कानमें सूराम्प करवाना

औरतोंके लिये जेवरात पहनेनेके लिये कान और नाकमें सूराम्प करवाना जाईज है, और इस मकसदके लिये अकसे

जियादा सुराज करवाना भी जाईल है.

(इतावा हिन्दिया जि. प, स. ३५७)

लाकिट पछेनकर बैतुलभला और गुसलजाना जाना

जिस लाकिट पर अल्लाह तआला का नाम जुदा हुवा या नकश किया हुवा हो उसको पछेनकर बैतुलभला और नापाक या गंदा गुसलजाना में जाना और गुसल करना बेअदबी है, औसी सूरत में लाकिट बाहिर उतारकर जाना चाहिये, अलबत्ता जो गुसलजाना पाक व साफ हो उसमें ये लाकिट पछेनकर जाने में कोई हर्ज नहीं. (इतावा हिन्दिया)

कलाई घड़ी पछेनना

औरतों के लिये हर किसम का कलाई घड़ी पछेनना जाईल है.

भूशबू ईस्तेमाल करना

औरतों के लिये भूशबू ईस्तेमाल करना जाईल है, लेकिन हदीस शरीफ में मरदों और औरतों की भूशबू में फर्क बताया गया है, यानी मर्द औसी भूशबू लगाये जिससे कपड़े पर रंग न लगे या हलकासा रंग लग जाये, मगर भूशबू तेज हो जो दूसरों तक पहुँच रही हो, मसलन ईत्रे गुलाब, मुस्क, अंबर, काकूर वगैरह लगा लें. और औरतों की भूशबू औसी हो जिसका रंग कपड़े पर जाहिर

हो ज़ाये मगर पूश्नू ज़होत ही मामूली हो, ज़ो भूद अपनी नाक तक पहुँच सके, या शौहर करीब हो तो उसको पूश्नू आ ज़ाये.

एक हदीसमें फ़रमाया गया है के ज़ो औरत पूश्नू लगाकर भरदोंकी मजलिस पर गुज़रेगी और लोगोंको उसकी पूश्नू आयेगी तो उस औरतका ये अमल जिनामें शुमार होगा.

१- हदीस ये है के :

“हज़रत अबू हुरैर (र.हि.) से रिवायत है के रसूले अकरम (स.अ.व.) ने ईरशाह फ़रमाया, भरदोंकी पूश्नू ऐसी हो जिसकी पूश्नू ज़ाहिर हो यानी दूसरोंको भी पहुँच रही हो, और उसका रंग पोशीदा हो. और औरतोंकी पूश्नू ऐसी हो जिसका रंग नज़र आ रहा हो और पूश्नू पोशीदा हो (यानी ज़होत मामूली पूश्नू आ रही हो).”

२- दूसरी हदीस ये है के :

हज़रत अबू मूसा (र.हि.) से रिवायत है के रसूले अकरम (स.अ.व.) ने ईरशाह फ़रमाया के (नज़रे ज़द डालनेवाली) हर आंग जिनाकार है, और कोई औरत ज़ाब ईत्र लगाकर (भरदोंकी) मजलिसके करीबसे गुज़रे तो ऐसी वैसी है, यानी जिनाकार है.”

(मिशक़ात स. ८६, अज़ अबू द़ाउद व तिरमिज़ी)

एक और हदीसमें है, “हज़रत मयमूना (र.हि.), हज़ूरे अकरम (स.अ.व.) का ईरशाह नक़ल करती हैं के : ज़ो कोई औरत पूश्नू लगाकर घरसे निकलती है और मर्द उसे देखते हैं, अब्बाल रब्बुल ईज़ज़त उससे मुसलसल नाराज़ रहते हैं, यहाँ तकके वो अपने घर वापस आ ज़ाये.”

(तबरानी)

लिहाज़ा ईन अहादीसकी रवसे तेज़ पूश्नू ईस्तेमाव

करनेसे औरतोंको सप्त परहेज करना जरूरी है, ताके वो ईस सप्त वर्धदसे मेहकूज रह सकें, अल्लाह तआला हम सबकी हिकाजत करमाओ.

पूशू व जीनतके साथ निकलनेकी ममानिअत

आज कल जे औरतें जेबो जीनत करके और पूशू लगाकर मरहोंकी मेहकिलोंमें बिला तकल्लुक शरीक होती हैं, और मेहकिलकी ज्ञान बढे शमओ मेहकिल शुमार होती हैं, सरकारे दो आलम (स.अ.व.) ने उनहें आजके बढ जातिनोंके बिलकुल जरअकस नूरे मेहकिल, और शमओ मेहकिलके बज्जओ, जुलमते मेहकिल और अंधेरा करार दिया है, युनांये ईरशाह है :

“हजरत मयमूना (रहि.) आप (स.अ.व.) का ये करमान नकल करती हैं के, उस औरतकी मिसाल जे शौहरके सिवा दूसरोके लिये जीनत करती है, क्रियामतके दिन उस अंधेरेकी तरह है जिसमें कुछ रोशनी नहीं.” (तबरानी)

परफ्यूम ईस्तेमाल करनेका हुकम

आज कल बाहिर ममाविकसे बने हुओ मुफ्तविक किसमके परफ्यूमज (Perfumes) सेंट और ईत्र वगैरह आते हैं और उनमें “अलकोहोल” (Alcohol) यानी स्पीट भी शामिल होता है तो उनका ईस्तेमाल जरईज होने या न होनेके मुतअव्हिक शरई हुकममें कुछ तफसील है. और वो ये है के “अलकोहोल” अगर बज्जूर या अंगूरकी शराबसे बना हुवा हो तो वो नापाक है, ईस

लिये उसका छिस्तेमाल ज़रूरी नहीं. और अगर वो अज़ूर या अंगूरके अलावा किसी और फल की शराबसे बना हुआ हो तो वो फल है और उसका पारख (बाहिरका) छिस्तेमाल शरअन ज़रूरी है.

और आज कल परफ्यूम (Perfumes) में जो "अलकोहोल" छिस्तेमाल होता है वो उमूमन अज़ूर या अंगूरकी शराबसे बना हुआ नहीं होता, बल्कि दूसरी सुगंधित किसमकी चीज़ों मसलन मकई, ज़ुवार, गंधुम, बेर, आलू, यावेल या पेट्रोल वगैरहसे बना हुआ होता है, बिछाऊँ ऐसा परफ्यूम शरअन नापाक नहीं, और उसके लगानेसे कपड़ा नापाक नहीं होगा, इस लिये उसका छिस्तेमाल ज़रूरी है, अगर किसीने ऐसा परफ्यूम कपड़ों पर लगाकर नमाज़ पढ़ ली तो उसकी नमाज़ अद्य हो गई, लौटानेकी ज़रूरत नहीं.

(तकमिलह इतहद मुवहिदम जि. उ स. ६०७)

ज़ेरे नाक बालोंकी सफ़ाई

ज़ेरे नाक बालोंकी सफ़ाई ये भी एक शरई मरअला है, इस लिये उसको यहाँ बयान किया जाता है, हदीस शरीफ़में आया है कि इस चीज़ें भिखावे क़तरत हैं, उनमेंसे एक चीज़ ज़ेरे नाक यानी ज़रई बालोंकी सफ़ाई है, इन ज़रई बालोंको हफ़तामें एक हफ़ा साफ़ करना अज़ज़ब है, अगर उससे ताभीर हो ज़अे तो पंद्रह दिनके अंदर साफ़ करना चाहिये, और अगर उससे भी ताभीर हो ज़अे तो ज़ियादासे ज़ियादा सालीस दिन तककी ताभीरकी गुंजाईश है, उससे ज़ियादा ताभीर करना ज़रूरी नहीं गुनाह है,

ईस लिये याहीस दिनसे पहले पहले ईन आर्छि बावोंकी साफ कर लेना चाहिये.

ईन आर्छि बावोंकी सफाईमें औरतके हकमें बेहतर ये है के वो उनकी सफाई यूना, पावडर, कीम, युटकी या चिमटी वगैरहसे करे, ब्लेड या उस्तरे वगैरहका ईस्तेमाल औरतके हकमें बेहतर नहीं, बिलाई औला है, फिर भी अगर किसी औरतने ब्लेड या उस्तरे वगैरहका ईस्तेमाल किया तो अगरये ये औरतके हकमें बिलाई औला है लेकिन नाजार्छि नहीं. (इतावा शामी ६/४०६)

जिंयी ओडीवाले जूते पहनेना

शरीअतमें औरतोंकी मरहोंके साथ मुशाबिहत ईज्तिहार करनेसे मना किया गया है, ईस लिये औरतके लिये मरदाना जूता पहनेना ईस मुशाबिहतकी वजहसे जार्छि नहीं, और जो जूते औरतोंके लिये बनाये गये हों, उई आम और रिवाजमें वो जूते औरतों कीके लिये समझे जाते हों, तो वो जूते औरतोंके लिये पहनेना बिलाशुबा जार्छि है, याहे उसकी ओडी जिंयी हो या नीची, और याहे वो आगेसे बंद हों या जुले, असल मद्धार उई व रिवाज पर यानी जिन जूतोंकी रिवाजमें मरहोंके लिये समझे जाते हों, उन जूतोंका ईस्तेमाल औरतोंके लिये जार्छि नहीं, और जो जूते उई व रिवाजमें मरहोंके लिये मशहूर न हों तो उनका ईस्तेमाल औरतोंके लिये जार्छि है.

हदीसमें है के, "ईन्ने अबी मुलैकका बयान है के हजरत आर्छिशा (र.दि.) से किसीने अर्ज किया के ओक औरत मरदाना जूता पहनेत है, हजरत आर्छिशा (र.दि.) ने इरमाया के अल्लाहके रसूल

(સ.અ.વ.) ને ઔસી ઔરત પર લાગત ફરમાઈ હૈ જો મરદોંકે તૌર તરીક ઈજ્તિયાર કરે. (અબૂ દાઉદ જિ. ૨, સ. ૨૧૦)

યે ચંદ અહમ ઔર ઝરૂરી શરઈ મસાઈલ કદરે તફસીલ ઔર વઝાહતકે સાથ, ઈસ ઉમ્મીદસે લિખ દિયે ગયે હૈં કે હમારી મુઅજ્જલ માએ ઔર પ્યારી બહેનેં ઈન પર અમલ પૈરા હોનેકી કોશિશ કરેંગી તો ઈન્શા અલ્લાહ તઆલા ઈસસે ઈનકી દુનિયા વ આબિરત સંવર જાએગી, અલ્લાહ સુખ્દાનહૂ વ તઆલા તમામ મુસલમાન ઔરતોંકો ઈસકી તૌફીક આતા ફરમાએ,

વ સલ્લલ્લાહુ તઆલા અલન્નાબિયિલ ખાતમિ વ આલિહી વ સહબિહી અજમઈન.

દુઆઓંકા મોહતાજ

મુહમ્મદ કમાલુદ્દીન અહમદ રાશિદી

દારૂલ ઈફતા જામિઆ દારૂલ ઉલૂમ કરાચી

પૌમુલ ઈદ ૧૦ ઝિલ હજ્જ સન હિ. ૧૪૨૦

ખતમ શુદ

